International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 71-76

माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन

प्रो. डॉ. मंजू शर्मा*
अनीता यादव**

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग में मनुष्य ने बड़ी तेजी से विकास किया है मनुष्य ने केवल पृथ्वी पर ही नहीं बल्कि अन्य दूसरे ग्रहों पर भी उसने विकास के पंख फैलाए हैं। मानव ने अपनी वृद्धि का प्रयोग कर विकास का प्रथम लहराया है। आज मनुष्य अपने घर पर बैठकर सारे संसार की जानकारी इकट्ठा कर रहा है। मानव ने तकनीकी का विकास इतना कर लिया है कि स्वयं सृष्टि निर्माता को चुनौती देकर तकनीकी निर्मित मानव ख रोबोट, तैयार कर डाला है और आधुनिकीकरण के इस पथ पर वह शिक्षा के द्वारा ही अग्रसर हो सका है। शिक्षा मानव विकास के लिए परम आवश्यक है।

समाज के विकास के लिए शिक्षा एक मूल्य साधन है इसलिए प्रत्येक समाज में शिक्षा की व्यवस्था करना प्राचीन समय से ही एक महत्वपूर्ण कार्य समझा गया है। प्राचीन समय में शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुल ;ा आश्रम में की जाती थी लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में काफी बदलाव आया है। शिक्षा मानव जीवन के विकास व परिष्कार की प्रणाली है तो दूसरी ओर समाज को नियंत्रित व संस्कारित करने की प्रक्रिया है। शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा के द्वारा ही बौद्धिक समाज का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है। प्रत्येक समाज की उन्नति के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है बिना शिक्षा के मानव जीवन भार स्वरूप होता है। शिक्षा मानव समाज के विकास से लेकर सभी प्रकार के कार्यकलापों में एक दूसरे के साथ गुथी हुई है।

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक सरकार के द्वारा समय–समय पर अनेक योजनाएं चलाई जाती रही है। योजनाएं शिक्षा के विकास की गति को बढ़ाने के लिए बनाई जाती है। इन योजनाओं में से मुख्य योजनाएं – ताराचंद समिति (1948) आचार्य नरेंद्र देव समिति (1953) माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–1953) कोठारी आयोग (1964–66) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) आदि का गठन किया गया है।

संविधान में पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन हेतु आरक्षण तथा छात्रावास की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर एन.सी.सी., आर.एस.एस., स्काउटिंग जैसे शैक्षिक गतिविधियों का संचालन किया गया है जिससे विद्यार्थियों का आपसी सहयोग में नेतृत्व क्षमता का विकास हो सके। वर्तमान समय में शिक्षा के स्वरूप में बदलाव आया है। प्राचीन समय में शिक्षा शिक्षक केंद्रित होती थी, शिक्षक जो पढ़ाता था विद्यार्थी रटता था लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा बाल केंद्रित है। शिक्षा में बालक को ध्यान में रखते हुए शिक्षा दी जाती है। शिक्षा इस प्रकार से दी जाएगी बालक प्रत्येक स्थान पर अपने को समायोजित कर सके तथा बालक अपनी आवश्यकता के अनुसार समझ सके। इसके लिए सरकार ने अनेक शैक्षणिक सुविधाओं तथा कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। प्राचीन समय से चली आ रही शिक्षा व्यवस्था में समय–समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और समय की मांग के अनुसार विभिन्न शिक्षाविदों व विभिन्न आयोगों के द्वारा शिक्षा पद्धति में सुधार के सुझाव दिए इस प्रकार परिष्कृत रूप में शिक्षा का माध्यमिक स्वरूप उभरकर सामने आया है।

* निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा वास्तव में प्रारंभिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। शिक्षा में यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक बच्चे का भविष्य उसे माध्यमिक स्तर पर मिली सफलता पर निर्भर करती है। एक बच्चे की शिक्षा की जड़े मजबूत करने के लिए माध्यमिक शिक्षा उसके भविष्य को आकार और दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामान्य रूप से माध्यमिक शिक्षा का वह शिक्षा है जिससे कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा व्यवस्था होती है। कुछ राज्यों में 11वीं 12वीं को हायर सेकेंडरी कहा जाता है।

परिभाषा

- प्रोफेसर हुमायूं कबीर लिखते हैं "माध्यमिक शिक्षा शिक्षा की एक ऐसी कड़ी है जो प्राथमिक व उच्च शिक्षा को एक लड़का के साथ एक कड़ी में बाधंती है।
- कोठारी शिक्षा आयोग की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का अर्थ वर्षों में व्यक्त किया है। कोठारी आयोग के अनुसार सात आठ वर्ष तक की प्राइमरी शिक्षा होती है और उसके बाद 4 तथा 5 वर्ष की माध्यमिक शिक्षा होती है।

आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण वह बदलाव है जिसके चलने से पहले हम पुरानी चल रही व्यवस्था को साफ तौर से देखकर उसका अध्ययन कर सकते हैं। आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का इस तरह उपयोग किया कि जिस से ज्यादा लाभ अर्जित किया जा सके।

आधुनिकीकरण का शाब्दिक अर्थ है आधुनिकतम विचारों का स्वरूप तथा स्तर से अनुकूलन करना।

परिभाषाएं

- **हालपण के अनुसार** " आधुनिकीकरण रूपांतरण से संबंधित है। इसके अंतर्गत उन सभी पहलुओं जैसे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, धार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक आदि का रूपांतरण किया जाता है जिसे व्यक्ति अपने समाज में निर्माण में प्रयोग करता है "।
- **श्याम चरण दुबे के अनुसार** " आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पहले से चली आ रही व्यवस्था को तकनीकी के माध्यम से उसमें परिवर्तन लाया जाता है।

उपलब्धि का अर्थ

उपलब्धि परीक्षाएं व परीक्षाएं हैं जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों से और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। उपलब्धि परीक्षार्थियों के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएं इस प्रकार से है।

परिभाषाएं

- प्रेसी रॉबिंसन वह फॉरेक्स के अनुसार – उपलब्धि परीक्षण का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माफ करने के लिए किया जाता है।
- थॉनर्डाइक बैगन के अनुसार – जब हम उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग करते हैं तब इस बात का निश्चित करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत व्यक्ति ने क्या सीखा है।

अध्ययन का औचित्य

जब से हमारा संविधान अंगीकार किया गया था तब के भारत और आज के भारत में आमूलचूल परिवर्तन हो चुके हैं। आज राजनीति के तौर तरीके वैसे नहीं है जैसे संविधान निर्माताओं ने सोचे थे। विकास की दौड़ में देश का भीतरी संतुलन भी बहुत बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालय शिक्षा का वह केंद्र होता है जहां बच्चों के उज्जवल भविष्य का निर्माण होता है। विद्यालय में ही विद्यार्थी में सहयोग नेतृत्व की भावना का विकास होता है। संचार साधनों एवं सेवाओं चलचित्र, दूरदर्शन तथा अन्य सूचना माध्यमों के रूप में संचार के साधन बढ़ते गए

साथ ही सात अन्य साधनों से संपर्क बढ़ता गया। इन सभी नवीन विकास के द्वारा न केवल आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिला बल्कि शिक्षा प्रणाली में भी आधुनिकीकरण देखने को मिला जिसके कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि के महत्व को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी के आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव को जानने के लिए यह शोध कार्य करने का निर्णय लिया।

समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन"।

संबंधित साहित्य

- बेबी सक्सेना, के एवं सिहर 2005 ने सूचना संचार प्रौद्योगिकी और अध्यापक प्रशिक्षण एक अनुभवजन्य अध्ययन पर शोध किया। इन्होंने अपने शोध में पाया कि 80: से ज्यादा अध्याय प्रशिक्षकों में शैक्षिक प्रौद्योगिकियों का शिक्षण में उपयोग नहीं किया। 70 से 90: अध्यापक प्रशिक्षकों के समय सूचना संचार प्रौद्योगिकी माध्यमों का उपयोग नहीं किया।
- यू मिश्रा 2005 ने सेक्स और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध में आधुनिकीकरण की मनोवृति का अध्ययन किया शोध निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाली महिला पुरुष समूह की तुलना में उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले महिला व पुरुष समूह में आधुनिकीकरण के प्रति दृ ष्टिकोण उच्च पाया गया।
- एस. एच. भास्करण, एन. सादेश खेल एवं डी. भास्करण (2005) में प्रतिवृद्ध मूल्यांकन तकनीकी का एकेडमी प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि निजी स्कूलों और पब्लिक स्कूल के छात्रों के प्रदर्शन के मध्य मानव में महत्वपूर्ण अंतर है।
- गौरव राय एवं नीतू यादव (2009) में भारत के उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता पर शोध किया।
- शोध निष्कर्ष में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों के पर्यावरण शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाओं के पर्याप्त कमी है तथा विद्यालयों की अवस्थिति शिक्षण प्रक्रिया को बाधित करती है।
- अलका कटिहार एवं प्रतिभा वर्मा (2009) ने उच्च शिक्षा में गुणात्मक क्रांति का अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि 21वीं सदी सूचना क्रांति का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट कंपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- विनोद कुमार श्रीवास्तव एवं अमित कुमार (2009) ने गुणवत्तापूर्ण सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि गुणवत्तापूर्ण सार्वभौम शिक्षा प्राथमिक शिक्षा की कुछ समस्याओं पर प्रकाश डाला समस्या के समाधान के लिए कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किए गए जिन्हें अपनाकर प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है।
- मैरीलैंड विश्वविद्यालय (2010) के शोध में यह नतीजा सामने आया कि वर्तमान में प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरण जैसे मोबाइल, फोंस, कंप्यूटर, MP3, टीवी आदि अनिवार्य हो गए हैं। जहां प्रौद्योगिकी के लाभ के साथ–साथ इसके दुष्परिणाम भी नजर आ रहे हैं।
- अमेरिकी मेडिकल एसोसिएशन (2010) के हाल ही हुए शोध में यह नतीजा सामने आया कि दिल और दिमाग के नजदीक आधुनिकीकरण के प्रतीक बन चुके मोबाइल फोन का इस्तेमाल सेहत के लिए नुकसानदेह हो सकता है। यह सिर्फ हमारी शारीरिक सेहत को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि हमारे रिश्तो पर भी प्रभाव डालता है।

तकनीकी शब्दावली

माध्यमिक शिक्षा वास्तव में प्रारंभिक और उच्चतर शिक्षा के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है और इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक बच्चे का भविष्य उसे माध्यमिक स्तर पर मिली सफलता पर निर्भर करती है। माध्यमिक स्तर में 8 से 12 वर्ष के आयु समूह के बच्चे शामिल है जो कक्षा 6–8 से लेकर 9 और 10 कक्षा में पढ़ रहे हैं।

"आधुनिक करण का शाब्दिक अर्थ है कि आधुनिकतम विचारों का स्वरूप तथा स्तर के अनुकूल करना"।

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में विद्यार्थियों छात्र एवं छात्राएं की उपलब्धि के अंतर नहीं पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में अंतर नहीं पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में अंतर नहीं पाया जाता है।

सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य को जयपुर जिले तक सीमित रखा जाएगा तथा माध्यमिक स्तर के 2 विद्यालयों को ही रखा गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा डॉ एस पी अहलूवालिया एवं एके कालिया द्वारा निर्मित व्यापक आधुनिकीकरण सूची मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

चर

- स्वतंत्र चर – आधुनिकीकरण
- आश्रित चर – विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के विद्यार्थियों की जनसंख्या के रूप में माना जाएगा।

न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन स्त्री कृत याज्ञिक विधि द्वारा किया जाएगा।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के 2 विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में डॉ. एस. पी. आहूवालिया एवं डॉ. एस. के. वालिया द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण व्याख्या

प्राकल्पनाः माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में छात्र एवं छात्राएं की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	50	175.95	21.69	2.90	0.05	अस्वीकृत
छात्रा	50	198.95	24.46			

$df = N_1, N_2 - 2 = 50+50-2=98$

.05 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 1.98

.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 2.63

व्याख्या वह विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 1 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं के आधुनिकीकरण को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि $df = 98$ का 'टी' तालिका मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1. 98 व 2.63 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 2.99 है 'टी' तालिका तालिका मूल्य के दोनों स्तरों से अधिक है आते हैं। अतः निराकरण परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में छात्र एवं छात्राएं की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है "अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण में छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि में भिन्नता पाई जाती है।

परिकल्पना 2

माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है

तालिका संख्या 2

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	50	113.95	9.06	1.10	स्वीकृत
सरकारी विद्यार्थी	50	110.45	10.48		

$df = N_1, N_2 - 2 = 50+50-2=98$

.05 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 1.98

.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 2.63

व्याख्या व विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 2 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर आधुनिकीकरण उपलब्धि को दर्शाती है। तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि क≒198 का 'टी' तालिका मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 है। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 1.10 है जोकि 1 तालिका मूल्य के दोनों स्तरों से कम है। अतः निराकरणीय परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक अंतर नहीं है स्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों पर आधुनिकीकरण का उपलब्धि पर कोई अंतर नहीं पाया जाता।

परिकल्पना 3

माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है

तालिका संख्या 3

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
निजी विद्यार्थी	50	175.96	21.68	2.99	0.05
सरकारी विद्यार्थी	50	198.96	25.46		

$df = N_1, N_2 - 2 = 50+50-2=98$

.05 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 1.98

.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 2.63

व्याख्या व विश्लेषण

उपरोक्त तालिका संख्या 3 माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि के प्रभाव को दर्शाती है। तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df 98 का तालिका मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 है। गणना करने पर 'टी' प्राप्त मूल्य 2.99 है जोकि 'टी' तालिका मूल्य के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निराकरण में परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर आधुनिकीकरण का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा रीटा – "शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी" शिक्षा प्रकाशन जयपुर 2005
2. अग्निहोत्री, आर – "आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएं और समाधान" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1987
3. बेस्ट जॉन डब्लू.– "रिसर्च इन एजुकेशन" दिल्ली प्रिंटिंग हॉल प्रा. लि. 1963
4. भटनागर, सुरेश – "अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार" इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2005
5. भार्गव, महेश – "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन" हरप्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, आगरा 1992
6. चतुर्वेदी, सुधा एवं शर्मा अनीता – "उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा" पंचशील प्रकाशन, जयपुर
7. चौधरी सी. एम. – "अनुसंधान प्रविधिया"
8. शर्मा, आर. ए. – "शिक्षा अनुसंधान" सूर्य प्रकाशन पब्लिकेशन मेरठ, 2005
9. गर्ग, ओम प्रकाश, चतुर्वेदी सुधा – "शैक्षिक प्रबंध एवं विद्यालय संगठन"
10. कपिल एच. के. – "अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस कल्याणी पब्लिशर्स. पंजाब
11. गिरीशपाल सिंह – " शिक्षा मनोविज्ञान"
12. कपिल एच.के. – " सांख्यिकी के मूल तत्व" एचपी भार्गव बुक हाउस. आगरा संस्करण 2000
13. पाठक जी.डी. – " शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
14. शर्मा आर. एस. – " शोध प्रबंध लेखन" कमल बुक डिपो मेरठ, 2004
15. श्रीवास्तव डॉ. डी. एन. – " अनुसंधान विधियां " साहित्य प्रकाशन आगरा, 2006
16. शर्मा आर. के. एवं शर्मा एच. – " शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार "
17. पांडे राम शुक्ल एवं गुप्ता रमेश चंद्र – " शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा

जनरल्स और सर्वे

1. इंडियन एजुकेशन एब्स्ट्रेक्ट – जुलाई 2006 एन.सी.ई.आर.टी.
2. इंडियन एजुकेशन एब्स्ट्रेक्ट – जनवरी 2006 एन.सी.ई.आर.टी.
3. जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय एब्स्ट्रेक्ट वर्ष 2009–10
4. जनरल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन फॉर एजुकेशनल रिसर्च – वॉल्यूम 17 (3–4) मार्च–2011

❖◆❖